[A-68] No. of printed pages : 2

SARDAR PATEL UNIVERSITY
MA (IV Semester) Examination
Saturday [illegible]
2.30 p[illegible]
PA04C[illegible]03 - H[illegible]
छायावादोत्तर काव्य

Total Marks: 70

प्र.१ रामधारीसिंह दिनकर कृत 'उर्वशी' काव्य की समीक्षा कीजिए । (१७)

अथवा

प्र.१ 'असाध्य वीणा' का काव्य रूप बताते हुए उसके वस्तुपक्ष पर प्रकाश डालिए ।

प्र.२ कलापक्ष की दृष्टि से नागार्जुन की पठित कविताओं की समीक्षा करें । (१७)

अथवा

प्र.२ 'मुक्तिबोध ने 'अँधेरे में' काव्य में फैंटेसी का सफल प्रयोग किया है'-कथन की विस्तृत चर्चा कीजिए ।

प्र.३ टिप्पणी लिखें: **(किन्हीं दो)** (१८)

(१) 'तेरी खोपड़ी के अन्दर' कविता का शीर्षक एवं केन्द्रीय विषय
(२) 'अँधेरे में' काव्य की विशेषताएँ
(३) छायावादोत्तर काव्य का परिचय
(४) नागार्जुन की विचारधारा और रचनाएँ

प्र.४ ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : (१८)

(१) तुम बढ़ो, प्लावन तुम्हारा घरघराता उठे,
यह स्रोतस्विनी ही कर्मनाशा कीर्तिनाशा घोर काल-प्रवाहिनी बन जाय
तो हमें स्वीकार है वह भी । उसी में रेत होकर
फिर छनेंगे हम । जमेंगे कहीं फिर पैर टेकेंगे ।
कहीं फिर भी खड़ा होगा नये व्यक्तित्व का आकार

अथवा

(१) अबतक क्या किया,
जीवन क्या जिया !!
बताओ तो किस-किसके लिए तुम दौड़ गए
करुणा के दृश्यों से हाय ! मुँह मोड़ गए,
बन गए पत्थर;
बहुत-बहुत ज्यादा लिया,
दिया बहुत-बहुत कम;
मर गया देश, अरे, जीवित रह गए तुम !!

(२) कट गया वर्ष ऐसे जैसे दो निमिष गये,
प्रिय! छोड़ गन्धमादन को अब जाना होगा,
इस भूमि-स्वर्ग के हरे-भरे शीतल वन
जाने कब राजपुरी से फिर आना होगा !
कितना अपार सुख था, बैठे चट्टानों पर
हम साथ-साथ झरनों में पाँव भिगोते थे
तब ले परस्पर बाँहों उपधान बना
हम किस प्रकार निश्चिन्त छाँह में सोते थे !

अथवा

अचरज की बात है
यकीन नहीं आता है मेरी बात पर आप
कीजिए न कीजिए आप चाहे विश्वास
साक्षी है धरती, साक्षी है आकाश
और और और भले व्याधियाँ हो भारत में
उठाकर दोनों बाँह
किट-किट करने लगा जोरों से प्रेत
-''किंतु भूख या क्षुधा नाम हो जिसका
ऐसी किसी व्याधि का पता नहीं हमको

* * *